The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences
(IJARMS)
Volume 1 Issue 2, 2018

भारत का आर्थिक उत्थान एवं शिथिलनः एक ऐतिहासिक शोधात्मक अध्ययन

M, egEen 'kehe
एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य, राजकीय महाविद्यालय, महाराजगंज

lUnHk

भारत में मुगल साम्राज्य के समय यहाँ की धन संपदा से आकर्षित होकर अनेक यूरोपियन व्यापरिक कंपनियो ने यहाँ प्रवेश किया जिनमें पुर्तगाली, डच, डेनिश, फ्रेन्च तथा अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी आदि प्रमुख थी। कालान्तर में इन सभी विदेशी कम्पनियों के संघर्ष का अन्त अंग्रेजो द्वारा भारतीय समुद्री व्यापार पर स्वामित्व हासिल करने और एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरने से हुआ। इस घटना के बाद भारत के साथ ब्रिटेन के आर्थिक सम्बन्धों का एक नया युग प्रारम्भ हुआ जिसमें भारत, औद्योगिक इंग्लैण्ड का एक उपनिवेश बन गया। भारत पर राजनीतिक अधिकार के बाद अंग्रेजों ने भारत को अपना गुलाम देश बना लिया। भारत की सम्पत्ति और संसाधनो को अंग्रेज ब्रिटेन में भेज रहे थे और इसके बदले भारत को पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं मिल रहा था। यह आर्थिक दोहन ब्रिटिश शासन की खास व्यवस्था थी। दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक ''पावर्टी एण्ड अन–ब्रिटिश रूल इन इंडिया'' में ब्रिटिश शासन की आर्थिक कुर्रीतियों का वर्णन किया है। दादा भाई ने धन की निकासी को ''अनिष्टो के अनिष्ट'' की संज्ञा दी।

ifjp;

इस भौगोलिक एकता ने देश के प्रत्येक भाग के सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन को प्रभावित किया। महाजनपद काल तक आते–आते भारत में नये व्यवसायों का उदय, व्यापार एवं वाणिज्य की प्रगति, सिक्कों का प्रचलन, सूद एवं कर्ज की प्रथा, नगरों के उदय एवं नगरीय जीवन का विकास हुआ, जिससे भारत का आर्थिक विकास उत्तरोत्तर विकसित होता गया।

भारत का आर्थिक विकास सिंधु घाटी सभ्यता से आरम्भ माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्यतः व्यापार पर आधारित प्रतीत होती है जो यातायात में प्रगति के आधार पर समझी जा सकती है। लगभग 600 ई०पू० महाजनपदों में विशेष रूप से चिह्नित सिक्कों को ढ़ालना आरम्भ कर दिया था। इस समय को गहन व्यापारिक गतिविधि एवं नगरीय विकास के रूप में चिह्नित किया जाता है। 300 ई०पू० से मौर्य काल ने भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण किया। राजनीतिक एकीकरण और सैन्य सुरक्षा ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ, व्यापार एवं वाणिज्य से सामान्य आर्थिक प्रणाली को बढ़ाव मिल।

अगले 1500 वर्षों में भारत में राष्ट्रकूट, होयसल और पश्चिमी गंग जैसे प्रतिष्ठित सभ्यताओं का विकास हुआ। इस अवधि के दौरान भारत को प्राचीन एवं 17वीं सदी तक के मध्ययुगीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में आंकलित किया जाता है। इसमें विश्व के की कुल सम्पति का एक तिहाई से

एक चौथाई भाग मराठा साम्राज्य के पास था, इसमें यूरोपीय उपनिवेशवाद के दौरान तेजी से गिरावट आयी।

आर्थिक इतिहासकार अंगस मैडीसन की पुस्तक द वर्ल्ड इकॉनमी ए मिलेनियल पर्स्पेक्टिव (विश्व अर्थव्यवस्था एक हजार वर्ष का परिप्रेक्ष्य) के अनुसार भारत विश्व का सबसे धनी देश था और 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यस्था था।
भारत में इसके स्वतंत्र इतिहास में केंद्रीय नियोजन का अनुसरण किया गया है जिसमें सार्वजनिक स्वामित्व, विनियमन, लाल फीताशाही और व्यापार अवरोध विस्तृत रूप से शामिल है।1991 के आर्थिक संकट के बाद केन्द्र सरकार ने आर्थिक उदारीकरण की नीति आरम्भ कर दी। भारत आर्थिक पूंजीवाद को बढ़ावा देन लग गया और विश्व की तेजी से बढ़ती आर्थिक अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनकर उभरा। भारत में चक्रवर्ती साम्राज्यों की स्थापना एवं इतिहास लेखन मौर्य काल से प्रारंभ हुआ। मौर्य सम्राट अशोक मौर्य के शिलालेखों को पहले लिखित ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप में स्वीकार किया जाता है।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार मौर्य काल में व्यापार एवं वाणिज्य की प्रगति चरम पर थी, भारत में बन्दरगाहों की व्यवस्था थी। मेगस्थनीज के अनुसार मार्गो के निर्माण कार्य की व्यवस्था 'एग्रोनोमोई' नामक अधिकारी करता था। पश्चिमी एशिया और मिस्त्र, फारस की खाड़ी और सदन आदि से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध था, चीन से भी व्यापार होता था। अर्थशास्त्र में चीनी रेशम का उल्लेख किया गया है। विदेशों का हाथी दाँत, मोती, रंग, नील, बहुमूल्य लकड़ियां, वस्त्र इत्यादि भेजे जाते थे। पुरातात्विक साक्ष्यों से अंतर्देशीय व्यापार का भी प्रमाण मिलता है। मौर्यकाल तक विकसित मुद्रा प्रणाली का भी प्रचलन हो चुका था। लक्षणाध्यक्ष, मुद्रा–व्यवस्था या राजकीय टकसाल का नियंत्रक था। मुद्रा के निर्माण एवं संचालन पर राज्य का एकाधिकार था, अर्थशास्त्र में भी विस्तृत मुद्रा प्रणाली की चर्चा की गयी है, विभिन्न प्रकार के सिक्कों, पण, स्वर्ण, कर्शापण, माशक, कांकणी आदि का उल्लेख मिलता है। जो मुख्यतः चांदी, तांबे आदि धातुओं के होते थे। इस समय की देश की आर्थिक सम्पन्नता ने कला–कौशल एवं धार्मिक –शैक्षणिक विकास को भी प्रभावित किया।

मौर्य साम्रज्य (321 ई०पू०–184 ई०पू०) के बाद दूसरा चक्रवर्ती साम्राज्य गुप्त साम्राज्य (240 ई०पू०) था। आर्थिक दृष्टि से गुप्तकाल को भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है। गुप्त राजाओं ने महाराजाधिराज परमभट्टारक इत्यादि। बड़ी–बड़ी साम्राज्यवादी उपाधियां ग्रहण कीं जो कि तत्कालीन सुदृढ भारतीय साम्राज्य को दर्शाती हैं। इस समय भारत कृषि एवं व्यापार दोनो रूपों में आर्थिक रूप से समृद्ध था। तत्कालीन समय में गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी जैसी बड़ी नदियों के निचले पाट मुख्य जल–मार्ग थे। पूर्वी तट के बंदरगाह क्रमशः ताम्रलिप्ति, घंटशाला और कदूरा आदि पूर्व एशिया के साथ–साथ उत्तर–भारतीय व्यापार को संभालते थे तथा पश्चिमी तट के बंदरगाहों यथा भडौच, चोल, कल्याण तथा कैब्रे आदि के माध्यम से भूमध्य सागर एवं पश्चिम एशिया के साथ व्यापार होता था।
प्रमुख विदेशी व्यापार में मसालों, काली मिर्च, चंदन की लकड़ी, मोतियों, रत्नों, सुगन्धियों, नील और जड़ी–बूटियों का निर्यात पूर्ववत् होता रहा। भारतीय जलयान अब अरब–सागर, हिंद महासागर, तथा चीन सागर की नियमित यात्रा करने लगे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत में इस समय जहाजरानी तथा व्यापार में जीवंत रूचि उत्पन्न हो गयी थी।

गुप्तकाल में धातुओं के ज्ञान में भी बहुत उन्नति हुई थी। इस काल का सर्वाधिक भत्य अवशेष दिल्ली का सुप्रसिद्ध लौह–स्तम्भ है। जिसकी ऊँचाई तेइस फुट से कुछ अधिक है और जिसमें अब तक जंग नही लगा है, जो इस काल की वैज्ञानिक प्रगति का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

गुप्तकाल की आर्थिक–सम्पन्नता पर टिप्पणी करते हुए चीनी यात्री फाह्यान लिखता है, कि ''भारत के लोग सुखी व समृद्ध है।'' गुप्तकाल में भारत में स्वर्ण मुद्रा का अधिकांश प्रचलन उसकी समृद्धता का प्रतीक है।

कृषि, उद्योग एवं व्यापार उन्नत अवस्था में था। सिंचाई के लिए उचित प्रबन्ध किए गए थे, तथा किसानों पर भू–राजस्व का भार बहुत कम था।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है, कि प्राचीन काल में भारत का आर्थिक विकास विश्व में चरम पर था अतः इसी कारण से भारत को सोने की चिड़िया की संज्ञा प्रदान की गयी थी।

गुप्त वंश के पश्चात् वर्धन वंश के काल में भी भारत आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था। विख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग, सम्राट हर्षवर्धन (606 ई०–647 ई०) के काल में भारत आया था। ह्वेनसांग भारत में 630 ई० में आया और 644 ई० तक रहा। चीन लौटकर उसने 'पाश्चात्य संसार के लेख' (शी०यू०की०) नामक पुस्तक में अन्य विषयों के साथ ही तत्कालीन भारत की आर्थिक व्यवस्था की प्रगति पर भी विस्तृत ढंग से लिखा है।

सम्राट हर्षवर्धन के पश्चात् भारत की केन्द्रीय सत्ता छिन्न–भिन्न हो गयी तथा भारत में अनेक छोटे–बड़े राज्य स्थापित हो गये, इन राज्यों में परस्पर आपसी द्वेश के कारण भारत की राष्ट्रीय एकता को धक्का लगा, जिससे भारत की आर्थिक समृद्धि भी प्रभावित हुई ।

11 वीं–12 वीं सदीं में भारत पर तुर्को का आक्रमण हुआ, तुर्की आक्रमण से भारत को राजनीतिक क्षति के साथ–साथ आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ा। डॉ० राजवली पाण्डेय के अनुसार जब तक भारत में भारतीयों का राज्य था, उनके उपनिवेश बाहर विदेशों में लहलहाते थे, परन्तु भारत में अपने मूल आधार नष्ट हो जाने पर वे सूखने लगें।

इतिहासकार अलबेरूनी का विवरण 11 वीं सदीं के भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण श्रोत है। अलबेरूनी का पूरा नाम अबुरेहान मोहम्मद इब्बन अहमद अथवा अलबेरूनी था। सुल्तान महमूद गजनवी के काल 1030 ई० में उसने अपनी पुस्तक किताबुल–हिंद अथवा तहकीक–ए–हिन्द की रचना की, इसमें उसने भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन का वर्णन किया।

16 वीं शताब्दी में तुर्की साम्राज्य (दिल्ली सल्तनत) को अपदस्थ कर बाबर ने 1526 ई० में भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। इस काल से सम्बन्धित एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है, ''बाबर के संस्मरण'' अथवा तुजुक–ए–बाबरी जिसमें दी गयी जानकारी की प्रमाणिकता असंदिग्ध हैं, इसमें बाबर ने हिन्दुस्तान की दौलत का भी बड़ा सजीव वर्णन किया है। बाबर लिखता है कि ''हिन्दुस्तान की प्रमुख विशेषता यह है, कि यह एक विशाल देश है और इसमें सोने–चाँदी का प्राचुर्य है। दूसरी अच्छी बात यह है कि हिन्दुस्तान में हर एक पेशे और व्यवसाय प्रशिक्षण, पिता से पुत्र की परम्परा में पीढ़ियों से चला आया है।

भारत में मुगल साम्राज्य के समय यहाँ की धन संपदा से आकर्षित होकर अनेक यूरोपियन व्यापरिक कंपनियो ने यहाँ प्रवेश किया जिनमें पुर्तगाली, डच, डेनिश, फ्रेन्च तथा अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी आदि प्रमुख थी। कालान्तर में इन सभी विदेशी कम्पनियों के संघर्ष का अन्त अंग्रेजो द्वारा भारतीय समुद्री व्यापार पर स्वामित्व हासिल करने और एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरने से हुआ। इस घटना के बाद भारत के साथ ब्रिटेन के आर्थिक सम्बन्धों का एक नया युग प्रारम्भ हुआ जिसमें भारत, औद्योगिक इंग्लैण्ड का एक उपनिवेश बन गया। भारत पर राजनीतिक अधिकार के बाद अंग्रेजों ने भारत को अपना गुलाम देश बना लिया। भारत की सम्पत्ति और संसाधनो को अंग्रेज ब्रिटेन में भेज रहे थे और इसके बदले भारत को पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं मिल रहा था। यह आर्थिक दोहन ब्रिटिश शासन की

खास व्यवस्था थी। दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक ''पावर्टी एण्ड अन–ब्रिटिश रूल इन इंडिया'' में ब्रिटिश शासन की आर्थिक कुर्रीतियों का वर्णन किया है। दादा भाई ने धन की निकासी को ''अनिष्टो के अनिष्ट'' की संज्ञा दी।

सन् १७५० से १९१३ के बीच विश्व के प्रमुख देशों का उत्पादन प्रतिशत

		1750	1800	1830	1860	1880	1900	1913
यूरोप	यूरोप	23.1	28.0	34.1	53.6	62.0	63.0	57.8
	यूके	1.9	4.3	9.5	19.9	22.9	18.5	13.6
	जर्मनी	2.9	3.5	3.5	4.9	8.5	13.2	14.8
	फ़्रांस	4.0	4.2	5.2	7.9	7.8	6.8	6.1
	इटली	2.4	2.5	2.3	2.5	2.5	2.5	2.4
	रूस	5.0	5.6	5.6	7.0	7.6	8.8	8.2
नव-यूरोप	नव-यूरोप	0.1	0.8	2.4	7.2	14.7	23.6	32.0
	संयुक्त राज्य अमेरिका	0.1	0.8	2.4	7.2	14.7	23.6	32.0
उष्णकटिबंधीय	उष्णकटिबंधीय	76.8	71.2	63.3	39.2	23.3	13.4	10.2
	जापान	3.8	3.5	2.8	2.6	2.4	2.4	2.7
	चीन	32.8	33.3	29.8	19.7	12.5	6.2	3.6
	भारत	24.5	19.7	17.6	8.6	2.8	1.7	1.4

fu"d"k %& उपरोक्त शोध पत्र के विस्तृत विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीन काल से आधुनिक काल (भारतीय स्वतंत्रता काल 1947 ई०) तक भारत ने उत्तरोत्तर आर्थिक विकास किया परन्तु अंग्रेजो द्वारा भारतीय आर्थिक सम्पन्नता के दोहन द्वारा सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत को आर्थिक विपन्नता की कगार पर जा बड़ा किया। शोध पत्र का गहन अध्ययन करने पर यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि भारतीय समृद्धि के दोहन का प्रमुख कारण आपसी फूट व विदेशियों की गुलामी रही है। आज हमे पुनः भारत की प्राचीन समृद्धि को वापस पाना है साथ ही यह सिद्ध करना है कि भारत कोई सोने की चिड़िया नहीं जिसे कोई भी विदेशी बाज़ नोचने का दुस्साहस करें। आज भारत के व्यापार को समृद्ध करके व विदेशी वस्तुओं को भारतीय बाजार से हटाकर ''मेड इन इंडिया'' अथवा ''मेड इन भारत'' वाक्य को चरितार्थ करके भारत को आर्थिक रूप से इतना समृद्ध बनाना है, कि विश्व में भारत को ''सोने का शेर''की संज्ञा दी जाएं और इस शेर की दहाड़ सम्पूर्ण विश्व में गुंजायमना हो।

lkjk'k %& भारत एक भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विविधताओं से परिपूर्ण देश है। इसकी मौलिक एकता बाहरी विभिन्नता में निहित है। सम्पूर्ण भारत (आधुनिक पकिस्तान एवं बांग्लादेश सहित) प्राचीन काल से ही एक राष्ट्र के रूप में स्वीकार किया गया है। प्राचीन साहित्यकारों कवियों तथा इतिहासकारो ने इसे एक ऐसे विस्तृत भौगोलिक इकाई के रूप में देखा है, जो हिमालय पर्वतमाला से

लेकर समुद्र तक विस्तृत था। इस समूचे क्षेत्र पर शासन करने वालों को चक्रवर्ती की उपाधि से विभूशित किया गया है। अशोक तथा समुद्रगुप्त जैसे पराक्रमी और शक्तिशाली शासकों ने सम्पूर्ण भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बांधे रखा।

lnHk xUFk fVIi.kh

(1) झा, द्रिजेन्द्र नारायण एवं श्रीमाली, कृश्ण मोहन : प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय (1981)

(2) दुबे, सत्यनारायण : प्राचीन भारत का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, अस्पताल मार्ग, आगरा–3

(3) मुखर्जी, राधाकुमुद : द इकानांमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 1600–1800, इलाहाबाद (1967)

(4) वर्मा, रमेश चन्द्र : भारतीय संस्कृति

(5) वर्मा हरिश्चन्द्र : मध्यकालीन भारत, भाग –1 व भाग–2, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय (1993)

(6) विपिन चन्द्र : राइज एंड ग्रोथ ऑफ इकोनांमिक नेशनलिज्म इन इंडिया (इकोनांमिक) पालिसीज ऑफ इंडियन नेशनल लीडरशिप (1881–1915), नई दिल्ली (1966)

(7) सतीश चंद्र : उत्तरकालीन मुगल भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली

(8) श्रीवास्तव, आर्शीवादी लाल : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति : शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, अस्पताल मार्ग, आगरा–3

(9) श्रीवास्तव, कृश्णचन्द : प्राचीन भारत, केसवानी प्रेस, 391, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद (2003)

(10) दादाभाई नौरोजी : पावर्टी एंड अन–ब्रिटिश रूल इन इंडिया, लंदन (1901)

(11) मुखर्जी, राधाकुमुद : द इकानांमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया